शिव ॐ साई
प्रकाशन

SHIV OM SAI PRAKASHAN
95/3 Vallabh Nagar, Indore-03 (M.P.) India T: +91 731 4225754, 2530217

"काशी मरणान्मुक्ति को श्रेष्ठ आध्यात्मिक कृति के लिए विष्णुतीर्थ सम्मान"

27 अक्टूबर 2012, इन्दौर, महाराजश्री शिवोम तीर्थजी की प्रेरणा से वर्ष 2000 से "विष्णुतीर्थ सम्मान" श्री विष्णु तीर्थजी महाराज की स्मृति में संचालित किया जा रहा है| विश्व में श्रेष्ठ आध्यात्मिक सदविचार एवं सदचिन्तन को प्रोत्साहित करने हेतु श्रेष्ठ आध्यत्मिक कृति सम्मान इस वर्ष श्री मनोज ठक्कर एवं सुश्री रश्मि छाजेड़ (गादिया) को उनकी पुस्तक 'काशी मरणान्मुक्ति' को प्रदान किया गया| काशी मरणान्मुक्ति पुस्तक की अभूतपूर्व यात्रा में यह सम्मान एक और मील का पत्थर है| इन्दौर में आयोजित इस समारोह के मुख्य अतिथि मध्य प्रदेश राज्य के भूतपूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान महासचिव, भारतीय कांग्रेस कमिटी श्रीमान दिग्विजय सिंह थे| इस अवसर पर उनका कहना था कि पहली बार महाराज श्री से एक कुटी में मिलना हुआ एवं तबसे आध्यात्म कि ओर रुझान बढ़ा| साथ ही उन्होंने कहा कि आज के परिवेश में भौतिकता ने आध्यत्मिकता को दबा रखा है एवं कई ऐसे संत भी है जो मिडिया या अपना प्रचार नहीं करते हुए भी अपने आध्यात्म की राह पर अग्रसर रहते है इसीलिए आज का युवा भौतिकता की ओर अपने कदम बढ़ा रहा है जो देश की संस्कृति के लिए खतरा हो सकता है| साथ साथ उन्होंने यह भी कहा कि मनोज ठक्कर जी जो भगवा धारण किए बिना भी आध्यत्मिकता एवं भौतिकता का समन्वय बनाते हुए सभी के लिए एक प्रेरणा स्त्रोत है एवं देश के युवाओं के प्रति उनका कार्य बधाई का पात्र है| विष्णुतीर्थ सम्मान समिति को सरहाते हुए उन्होंने कहा कि उनका यह कार्य आध्यत्मिक लेखन के लिए प्रोत्साहित करता है|

दसवें विष्णुतीर्थ सम्मान से सम्मानित श्री ठक्कर एवं सुश्री रश्मि को पुरस्कार स्वरुप रु. 51000 (इक्यावन हज़ार रुपए) एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया| इस अवसर लेखक श्री ठक्कर का कहना था कि काशी, जो विश्व का आध्यात्मिक केंद्र है एवं वहां निश्चित ही परम ऊर्जा का अनुभव होता है बशर्ते मन अहंकार से परे हो| उन्होंने यह भी कहा की आतंरिक शक्ति को पहचानना ही शक्तिपात है| काशी मरणान्मुक्ति के सन्दर्भ में उन्होंने यह कहा कि काया ही काशी है एवं काया का साक्षात्कार ही मुक्ति है| दुनिया का सबसे बड़ा कार्य जीवित रहना है जोकि साँस लेने से होता है परन्तु वहा स्वतः होता है अथवा उसमे ' मैं ' का आना ही शिवमाया में फंसना है | साईं बाबा का गुरु रूप में मिलना उन पर एक अनुग्रह ही है| सहलेखिका रश्मिजी का कहना था कि बारह वर्ष पहले श्री ठक्कर जी द्वारा प्रेरणा मिलने के साथ ही एक नव जीवन की शुरआत हुई और इस पुस्तक कि सहलेखिका बनना उनके लिए गुरुकृपा मात्र है|

शिव ॐ साई
प्रकाशन

SHIV OM SAI PRAKASHAN
95/3 Vallabh Nagar, Indore-03 (M.P.) India T: +91 731 4225754, 2530217

लेखकद्वय ने इस पुस्तक के विक्रय से प्राप्त आय को समाज कल्याण हेतु उपयोग में लेने का निर्णय लिया था और इस पुरस्कार द्वारा प्राप्त राशि को भी उन्होंने शिव ॐ साई ट्रस्ट को अनुदान स्वरुप प्रदान किया| गृहस्थ सन्यासी श्री ठक्कर लेखन के साथ - साथ अपने स्तर पर युवाओं को प्रेरित कर भौतिक एवं आध्यात्मिक समन्वय की राह पर चलने की प्रेरणा देते है ताकि युवा अपनी ऊर्जा को सही दिशा में प्रेषित कर राष्ट्र निर्माण में सहयोग दे सके|

'काशी मरणान्मुक्ति' एक दार्शनिक उपन्यास है जो नायक 'महामृणन्गम' (महा), एक चांडाल के जीवन पर आधारित है, जिसमे एक चांडाल पुरुष को मानवीयता के उच्चतम शिखर प्रतिष्ठित किया गया है| यह उपन्यास अध्यात्म और दर्शन पर आधारित है एवं गुरु-शिष्य की अद्भुत परंपरा का सुन्दर एवं भावपूर्ण वर्णन है। यह गुरु-शिष्य सम्बन्ध की तृष्णा एवं अद्वैत अत्यंत सुन्दर रूप में प्रस्तुत करती है| तृष्णा की प्रस्तुति हर अध्याय के अंत में 'पर याद रख मैं तेरा गुरु नहीं|' कथन के आने से देखते ही बनती है एवं अद्वैत का वर्णन करते हुए पुस्तक कहती है कि शिष्य का बिना अहं के पूर्णरूपेण समर्पण ही उसे परम मार्ग की ओर प्रशस्त करता है, जब शिष्य, गुरु के इस मार्ग का सतत अनुसरण करता है तब गुरु एवं शिष्य में कोई भेद या द्वैत निहित नहीं होता अर्थात दोनों अद्वैत में रमते है| लेखकों की मान्यता हैं कि यह पुस्तक काशी विश्वनाथ का आशीष एवं गुरुप्रसाद है और वे इस रचना के लिए माध्यम मात्र है, इस प्रसाद को जन साधारण तक पहुँचाना ही उनका ध्येय है|

सधन्यवाद,

भवदीय,

शिव ॐ साई प्रकाशन परिवार

श्रीमान सम्पादक,